

## 05. दादी जी के महावाक्य

हम सब राजयोगी हैं। लेकिन योग का अंतिम चरण लाना है। इतना अपने को योगी बनाना है जो लगे कि योग भी हमारा कितना सुन्दर प्यारा सब्जेक्ट है। न तेरा, न मेरा, न ये, न वो; कुछ भी नहीं हो। ऐसा लगे सचमुच हम परमधाम घर में हैं। अब हमें जाना ही है उस घर में। घर जाना है यह आँखों में बसना चाहिए। यह याद रहे। मेरा वर्तमान यह पुरुषार्थ है, लक्ष्य है। इसी पर पूरा ध्यान है।

हम सबको वर्तमान समय यह स्थिति बिलकुल पॉवरफुल बनानी है। इसमें सब शक्तियाँ आ जायेंगी। रूहरिहान करो, प्वाइंट्स निकालो यह अच्छी बात है लेकिन प्वाइंट रूप बनने का बहुत ध्यान रखना है। तब ही स्वयं को स्वयं से संतुष्टता होती है। यह है योग की सिद्धि। इसका नाम है राजयोग। स्वयं हरेक दिल से यह कहे कि मैं कितना साइलेंस के टॉवर पर रहता हूँ जहाँ कुछ नहीं है।

स्वयं की शक्ति का स्टेर करने के लिए यह मेहनत ज़रूर करनी है। यह है वर्तमान का लक्ष्य, पुरुषार्थ, अनुभव। यह गुप्त मेहनत हम सब गुप्त पुरुषार्थियों को करना है।

वर्तमान समय हम बच्चों की पढ़ाई मनसा की है। सूक्ष्म संकल्प, सूक्ष्म दृष्टि व वृत्ति की पढ़ाई है। दृष्टि-वृत्ति इतनी महीन चीज़ हैं जिनको पवित्र बनाना है जिससे ही वायुमंडल बनता है। वाचा और कर्मणा तो मोटी चीज़ है, हमारी कोई मंत्र पढ़ने व जपने की पढ़ाई नहीं है लेकिन निरन्तर मन्मनाभव रहने की पढ़ाई है।

अब निरन्तर योगी कैसे बनें? सर्व बीमारियों की दवा है निरन्तर योग। जितना-जितना अपनी स्थिति अशरीरी बनाते जायेंगे उतना हमें जीवन के सर्व पहलुओं का हल मिल जायेगा।

बाबा ने लक्ष्य दिया है कि तुम अपने चार्ट में देखो कि मैं निरहंकारी कहाँ तक बना हूँ/बनी हूँ? वह तब होगा जब देह का भान न हो। निर्मानता से निरहंकारी बनते, दिलों को जीत लेते लेकिन इससे भी ऊपर है देह का भी भान न हो। हमें इन सबसे ऊपर जाना है।

अच्छा, ओम् शांति।

